Shodhpith
International Multidisciplinary
Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 2 Issue: 1 January-February 2026

पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यावरण संरक्षण

डॉ. पी.एम. भुमरे

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.एम.बी.पी.के. महाविद्यालय, शंकरनगर, बिलोली, नांदेड़

Article Info: *(Recieved- 06/11/2025, Accept- 15/12/2025, Published- 10/01/2026)*

DOI- 10.64127/Shodhpith.2026v2i1003

पर्यावरण के जैविक एवं अजैविक कारकों के परस्पर सम्बन्धों को पारिस्थितिकी तंत्र कहा जाता है। वैदिककाल से ही मानव प्रकृति अर्थात् जलवायु, अग्नि, सूर्य, वर्षा, पेड़–पौधों एवं किसी अज्ञात शक्ति जिसके द्वारा ही यह सम्पूर्ण संसार रचित है की पूजा करता आया है। विज्ञान, तकनीकी और संचार से बनती हुई इक्कीसवीं सदी ने निःसन्देह दुनिया के भूगोल को तथा वर्तमान समय को पूर्णरूपेण परिवर्तित कर दिया है। यांत्रिक सभ्यता ने जहाँ मानव सभ्यता को विकास के चरम उत्कर्ष पर लाकर खड़ा कर दिया हैं वहीं उसने मानव जीवन के समक्ष असंख्य कठिनाइयाँ एवं चुनौतियाँ भी उपस्थित कर दी हैं। इसके साथ–ही–साथ औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण के बढ़ते हस्तक्षेप ने प्रकृति, वातावरण तथा जलवायु को गम्भीर नुकसान भी पहुँचाया है।

''जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र के जलस्तर, पृथ्वी एवं भू–गर्भ के तापमान में निरन्तर वृद्धि, असमय वर्षा, असमय गर्मी एवं असमय सर्दी का दुष्प्रभाव फसल चक्र पर दृष्टिगोचर हो रहा है। हमारे पीने का पानी (पेयजल), जीवजन्तु, वनस्पति एवं मानव जीवन के समाज पर इसका कुप्रभाव किसी से भी छिपा नहीं है।''[1] भारतीय समाज में आदिकाल से ही प्रकृति पूजा की मान्यता प्रचलन में रही है।

पारिस्थितिकी की शब्द दुनिया में सर्वप्रथम सन् 1869 ई. में प्रचलन में आया था। जर्मनी के वैज्ञानिक अन्सर्ट हैकल ने इस शब्द का अर्थात् पारिस्थितिकी का सर्वप्रथम प्रयोग किया था। सन्तुलित वातावरण को पारिस्थितिकी तंत्र (ECOSYSTEM) भी कहा जाता है। पर्यावरण प्रदूषण तथा असन्तुलन आदि के कारण पारिस्थितिकी अवनति हो रही है। जब पर्यावरण के जैविक एवं अजैविक कारकों में मनुष्य अनावश्यक हस्तक्षेप करता है तब उसके परिण ाम स्वरूप अवक्रमण होता है इसे ही पारिस्थितिकी अवक्रमण की संज्ञा प्रदान की जाती है। जब हम पर्यावरण का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करते हैं तब हमें ज्ञात होता है कि पर्यावरण का सही ज्ञान पारिस्थितिकी विज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। अतः हम सकते हैं कि पारिस्थितिकी एक विज्ञान है जो प्राणियों एवं वातावरण के परस्पर सम्बन्ध तथा उनकी पारस्परिक निर्भरता को स्पष्ट करता है।

कुछ विद्वतजनों ने पारिस्थितिकी के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

''पारिस्थितिकी अध्ययन का एक ढंग है, जिसमें व्यक्ति, प्राणी तथा कुछ जीवों की जनसंख्या एवं समुदाय परिवर्तन के साथ प्रतिक्रिया करते हैं।''[2]

पारिस्थितिकी एक विज्ञान है जिसका सम्बन्ध प्राणियों, पौधों, पशुओं तथा उनके पर्यावरण के आन्तरिक सम्बन्धों से होता है।

''पारिस्थितिकी के अन्तर्गत प्राणियों तथा सम्पूर्ण जैविक तथा भौतिक कारकों, प्रभावों या उनको प्रभावित करने

वाले कारकों के सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।''[3]

अतः हम उपरोक्त विद्वतजनों के विचारों के आधार पर कह सकते हैं कि पारिस्थितिकी विज्ञान में प्राणियों तथा उनके वातावरण के आंतरिक सम्बन्धों, प्राणियों के आन्तरिक सम्बन्धों तथा जीवों के मध्य आंतरिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। सम्पूर्ण विश्व में युद्ध की विभीषिका ने पर्यावरण को गम्भीर खतरा पहुँचाया है। मिसाइल बन, राकेट, जैविक, रासायनिक आणविक हमलों ने केवल धरती के तापमान में ही वृद्धि नहीं की है बल्कि वायु एवं जल की गुणवत्ता को भी उच्च स्तर पर प्रभावित किया है। आणविक हथियारों के विस्फोट ने धरती की मिट्टी की गुणवत्ता को अत्यधिक प्रभावित किया है जिससे भू–गर्भीय नियंत्रण को भी खतरा उत्पन्न हो गया है कितने समय विनाशकारी भूकम्प आ जाये कुछ कहा नहीं जा सकता है। इसी संदर्भ में रामदरश मिश्र जी की कुछ काव्य पंक्तियों इस प्रकार हैं–

''छोड़ जाऊँगा
कुछ कविता, कुछ कहानियाँ, कुछ विचार
जिनमें होंगे
कुछ प्यार के फूल
कुछ तुम्हारे उसके दर्द की कथाएँ
कुछ समय–चिन्ताएँ।''[4]

''यह कौन–सी पूजा है जिसके लिए,
हँसते–महकते फूलों की असमय हत्या कर दी जाये,
और फिर उनकी,
पंखुड़ियाँ,
इधर–उधर कूड़े के ढेर पर,
फेंक दी जायें
दरअसल भगवान तो
अपने द्वारा सृजित
इन फूलों में बसते हैं
हँसते–महकते हुए।''[5]

कहने का तात्पर्य यह है कि यह कौन–सी पूजा है जिसके लिए पर्यावरणीय खतरा खुद निर्मित किया जाये। विकास के नाम पर तेजी से खड़े किये जा रहे कंक्रीट के जंगलों ने हमसे हमारी हवा, धूप, तथा बारिश को छीन लिया है जो पर्यावरण खतरे का खुला द्वार के समान है। आज मनुष्य कर्म भोगी कम सुविधा भोगी अधिक बनता जा रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति में तथा धार्मिक ग्रंथों, वेदों आदि में पर्यावरणीय अवयवों का विस्तृत विवरण दृष्टिगोचर होता है। उस कालखण्ड के मानव ने समस्त पदार्थों को महत्व प्रदान किया तथा उसकी उपयोगिता को स्वयं के जीवन में अनुभव भी किया परन्तु वर्तमान समय में ऐसा नहीं है।

भारतवर्ष में ही नहीं अपितु विश्व के किसी भी भू–भाग में ऋषि–मुनि या महान विद्वानों ने प्रकृति को बिना क्षति पहुँचाये उसकी सुरक्षा एवं समृद्धि में अपना सर्वस्व यहाँ तक कि स्वयं अपने को भी निछावर कर दिया। प्रकृति के आँगन में ही अपनी पर्णकुटियाँ निर्मित कीं, जहाँ पर पशु–पक्षियों का कलख, पेड़–पौधों की सुगन्धित हवा तथा स्वास्थ्यवर्धक वायु–जल तथा वनस्पतियों आदि की प्रचुर मात्रा स्थित थी। भोजन के रूप में उसने कन्दमूल, फल तथा जड़ी–बूटियों आदि का प्रयोग करके दीर्घायु जीवन व्यतीत किया, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते है। हाँ इतना अवश्य है कि उस जीवनायु को हम इतिहास में अवश्य पढ़ते हैं। उस कालखण्ड के मानव के निवास स्थान के प्रतीत स्वरूप आज भी देश ही नहीं विश्व के अनेक वृहत् एवं समृद्ध नगर बड़ी–बड़ी नदियों के तट पर ही स्थित हैं। यही कारण है कि हमारे देश भारतवर्ष में अति प्राचीनकाल से ही पारिस्थितिकी सन्तुलन बना हुआ है। यही कारण है कि पारिस्थितिकी सन्तुलन के मध्य में जीव, वनस्पति (जैवकीय) तथा अजैविकीय घटक एवं पर्यावरण की अन्तःक्रिया बनी रहती है। यही कारण है कि वैज्ञानिकों का कथन है कि–

''पारिस्थितिकी असन्तुलन और पर्यावरण–प्रदूषण एक–दूसरे के पर्याय हैं।''[6]

मूलतः पारिस्थितिकी के दो तत्त्व होते हैं प्रथम ''प्राकृतिक पारिस्थितिकी तथा द्वितीय सामाजिक पारिस्थितिकी। प्राकृतिक पारिस्थितिकी के अन्तर्गत नवीनीकरण के योग्य एवं नवीनीकरण के अयोग्य तथा सामाजिक पारिस्थितिकी में जैविकीय एवं अजैविकीय का समावेश होता है। जैविकीय पारिस्थितिकी में उपभोक्ता, उत्पादक, विनाशक तथा कार्बनिक तत्व होते हैं। इसके अतिरिक्त अजैविकीय पारिस्थितिकी में कार्बनिक तथा अकार्बनिक तत्त्वों का ही समावेश रहता है।''[7]

मानव जीवन के लिए प्राकृतिक पारिस्थितिकी तथा सामाजिक पारिस्थितिकी ये दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। पारि.

स्थितिकी में परिवार, समाज, देश तथा समस्त विश्व का सह–अस्तित्व ही मानवता के निर्माण में महत्व रखता है। पारिस्थितिकी में सामाजिक स्थान, व्यवसाय, व्यक्ति समूहों की प्रतिस्पर्धा, सहयोग, संघर्ष, विस्थापन, उत्तराधिकार की प्रक्रियाएँ, मानव जीव शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान आदि का अध्ययन किया जाता है।

पर्यावरण का तात्पर्य यह है कि प्राकृतिक तत्वों, जीवों तथा वातावरण में सन्तुलन। ईश्वर ने इस नश्वर संसार की संरचना को दीर्घकाल तक बने रहने के लिए एक नियंत्रण की व्यवस्था की है। इस नियंत्रण को ही पर्यावरण की संज्ञा प्रदान की जाती है। यदि पर्यावरण में असंतुलन पैदा हो जाये तो सम्पूर्ण मानव जाति खतरे में आ जाये। वर्तमान समय में पर्यावरण में असन्तुलन पैदा हो गया है। यही कारण है कि बीमारियाँ, असमय वर्षा, सर्दी, गर्मी आदि का प्रकोप झेलना पड़ रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व में मानवता खतरे के निशान के ऊपर से गुजर रही है। आये दिन अनेक प्राकृतिक–अप्राकृतिक घटनाओं के घटित होने सम्पूर्ण मानव जाति अत्यंत भयभीत है।

निष्कर्ष

ब्रह्माण्ड में पृथ्वी पर जीवन वह भी विशेषकर मानव जीवन का होना जितना आश्चर्यजनक है उतना ही इस धरा–धरातल पर मानव जीवन की प्रतिक्रियाओं की विविधता भी आश्यर्चजनक है। प्रकृति प्रदत्त इस अनमोल उपहार का आनन्द समस्त जीवधारी इस पृथ्वी, जल तथा आकाश में लेना चाहते हैं। यही कारण है कि जीवन में हलचल (विकास) की गतिशीलता बढ़ गयी है विकास की गतिशीलता ने ही इस प्राकृतिक धरोहर की स्थिति में बाधा उत्प. न्न कर दी है और उस बाधा का नाम है पर्यावरण असन्तुलन। मानव लालच में अत्यधिक खनन, औद्योगिकीकरण, भौतिकता तथा प्रदूषण आदि के माध्यम से इस विरासत पर्यावरण को हानि पहुँचा रहा है। प्रदूषण अनेक तरह के हैं। यथा–मृदा प्रदूषण, जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, ध्वनि–प्रदूषण तथा रेडियोधर्मी एवं तापीय प्रदूषण आदि। इनके कारण लगभग 27000 प्रजातियाँ प्रतिवर्ष विलुप्त होती जा रही हैं। अतः पर्यावरण को बचाना हमारा परम कर्तव्य है। यदि पर्यावरण को नजर अन्दाज किया गया तो भविष्य में मानव जाति को खतरा उत्पन्न हो जायेगा, कहीं ऐसा न हो कि मानव जाति ही न विलुप्त हो जाये।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. पर्यावरणीय संचेतना के समकालीन आयाम– डॉ. पवन कुमार रावत, पृ. 112, संस्करण 2025, संकल्प प्रकाशन कानपुर।
2. समकालीन विश्व में पर्यावरणीय मुद्दे–प्रीति नागोरा, पृ. 126, संस्करण 2022, संकल्प प्रकाशन कानपुर।
3. वही, पृ. 126
4. प्राची–सं. राकेश भ्रमर (रामदरश विशेषांक) वर्ष 08, अंक 03 अगस्त 2017
5. वही, अंक 03 अगस्त 2017
6. समकालीन विश्व में पर्यावरणीय मुद्दे–सं. प्रीति नागोरा, पृ. 127
7. वही, पृ. 127

Cite this Article-

'डॉ. पी.एम. भुमरे, 'पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यावरण संरक्षण' Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:2, Issue:01, January-February 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."